स्वाधीनता दिवस की २६वीं वर्षगांठ के अवसर पर लाल किले के प्राचीर से श्रीमती इन्दिरा गांधी का भाषण

308

1837

दिनांक: १५-८-१९७६

भारत के निवासी मेरे भाई-बहनों, प्यारे बच्चो,

जब भी मैं यहां झंडा फहराती हूं तो उस दिन की याद आती है जब पहली दफे ~~आज~~ आजाद भारत का झंडा यहां जवाहर लाल नेहरू ने फहराया था । वो याद आती है कि किस मुसीबत और कष्ट और कुर्बानी से यह देश गुजरा, किन आशाओं को ले के हमने यहां पर अपना झंडा फहराया । आज जब हम पीछे देखते हैं इन वर्षों की तरफ, तो यह देखते हैं कि जो रास्ता अपने सामने हमने रखा था उस पे काफी दूर हम आगे बढ़े हैं । साथ ही साथ भूल भी हुई है, गलतियां भी हुई हैं, काम में कमी भी हुई है। और जितना ही हम आगे बढ़े, उतना ही हमने देखा कि रास्ता आगे का कितना ज्यादा लम्बा है, यह देखा कि हर एक कदम पे कठिनाई बजाए कम होने के और बढ़ती है, यह देखा कि कुछ मांगें अगर पूरी होती हैं तो बहुत सी मांगें नई खड़ी हो जाती हैं। लेकिन यह जीवन का ऐसा ही रास्ता होता है। हमारी कोशिश रही है कि जो आदर्श हमारे महान नेताओं ने हमारे सामने और देश के सामने रखे, उसी पथ पर हम कदम आगे बढ़ायें ।

आजादी अनेक प्रकार की होती है । हमने जानबूझ के पूर्ण स्वराज्य केलिए लड़ा और उसे प्राप्त किया और यह उचित ही था, क्योंकि दूसरे किसी प्रकार की स्वतंत्रता को सच्चे माने में स्वतंत्रता नहीं कह सकते हैं। पूर्ण स्वराज्य के म-ाने केवल यह नहीं हैं कि आप अपने प्रतिनिधि को चुनें, केवल माने यह नहीं है कि जो अखबार लिखना चाहें, चाहे वह बहुत ही कम लोगों की आवाज़ उठाते हों, वह इजाजत मिले उनको । पूर्ण स्वराज्य के माने हैं कि स्वराज्य के फल, स्वराज्य के नतीजे भारत के घर घर तक पहुंचें । उन लोगों तक पहुंचें जिनकी

309

आवाज़ नहीं उठ सकती, उन लोगों तक पहुंचें जिनको शायद ठीक से मालूम भी नहीं है कि वे क्या चाहते हैं, उन लोगों तक पहुंचे जो आज तक सब सुविधाओं से वंचित रहे हैं। इस स्वराज्य की तरफ हम अपने देश को आगे ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यह रास्ता बनाने में बहुत से रोड़े आते हैं। किसी न किसी वर्ग के, किसी न किसी गुट के या किसी न किसी व्यक्ति के हित पर कुछ थोड़ा सा धक्का लगता है। हम चाहते हैं कि सबके जीवन में सुधार आये, बड़ा सा बड़ा हो, छोटे से छोटा हो। लेकिन अगर आप सोचें तो आपको खुद यह महसूस होगा कि जिसके पास आज भी है, उसको अगर और ज्यादा मिलता जाता है तो जिसके पास नहीं है उसको कैसे कुछ मिल सकेगा? यही कारण है कि हमारा कार्यक्रम है तो सब भारतीयों के लिए, लेकिन ज्यादा ध्यान उन वर्गों पर दिया जाता है जो कमजोर कहलाते हैं। चाहे किसी कारण कमजोर हों - जाति के कारण, आर्थिक स्थिति के कारण, देश के किसी पिछड़े हुए इलाके में रहने के कारण।

तो हर कदम पे किसी न किसी से टक्कर खानी होती है। वह टक्कर हमने खाई, लेकिन हमने अपने पैर डगमगाने नहीं दिए और आज मुझे खुशी होती है, यह कह के कि इस पिछले वर्ष में कितनी उन्नति हमारे देश में की है।

एक कार्यक्रम हमने जनता के सामने रखा। उसमें कुछ सरकार के कर्तव्य थे और कुछ जनता के कर्तव्य थे। क्योंकि एक नया अनुशासन आया, क्योंकि एक नई भावना-आशा की, उम्मीद की-जनता के दिलों में उत्पन्न हुई, तो सबने इस कार्य में सहयोग दिया। मैं यह नहीं कहती हूं कि वह कार्य पूरा हो गया या जितना हम समझते थे, जितना हम चाहते थे, वह भी पूरा हुआ। ऐसा नहीं हुआ। लेकिन तब भी ठोस, जोरदार कदम आगे बढ़े हैं और काम चालू है। सब जगह बराबर तो नहीं है, जहां भी जनता जागरूक है, जहां के कार्यकर्ता मजबूत हैं, वहां पे वह काम और तेजी से आगे बढ़ा है। आप सब को तो मालूम है कि उत्पादन कितना बढ़ा। करीब करीब ७ प्रतिशत हमारे देश की उन्नति हुई है।

House to Pon 310

इसी प्रकार से जो हमारा गरीबों को घर देने का कार्यक्रम था, उसमें ७० लाख परिवारों को घर मिले हैं। बिजली बहुत बढ़ी है, दो हजार मेगावाट है। सिंचाई का कार्यक्रम तेजी से बढ़ा है और हमारी आशा है कि और तेजी से बढ़ेगा। जमीन सुधार का कार्यक्रम भी जितना हम चाहते थे उतना अभी भी नहीं हुआ। यह कोई नया कार्यक्रम नहीं है, बहुत पुराना है लेकिन जब भी इसको हाथ में लेते हैं तो जहां पे जमीन का बंटवारा होता है, वहां पे नये प्रश्न उठ खड़े होते हैं। और क्योंकि दूर दूर जगह हैं। सब जगह हमारी आंख भी नहीं पहुंच सकती और ठीक से उसकी खबर लोग समय पर नहीं देते हैं, तो बहुत सी गलतियां भी होती हैं। यह सब मुझे मालूम है और इसीलिए हर साल यहां और वहां भी मैं बोलती हूं मैं इसी बात पे जोर देती हूं कि जब तक जनता, चाहे वह किसान हो, चाहे वह मजदूर हो, चाहे वह गरीब हो या कोई और नागरिक हो, जब तक वह स्वयं इसको हाथ में नहीं लें कि जहां भी अन्याय हो उसकी तरफ ध्यान दिलाएं। और केवल शिकायत के रूप से नहीं, लेकिन सुझाव दिलाएं कि यह यहां पे गलती हुई है, इस प्रकार से हम और आप मिल के इस गलती को सुधार सकते हैं। यह भावना थोड़ी बहुत बढ़ी है। हम कह सकते हैं कि पिछले साल में जो जनता का सहयोग मिला, जो जनता में जागृति हुई, वह पहले से कहीं ज्यादा है। लेकिन मैं यह नहीं कहना चाहती हूं कि पहले कभी काम नहीं हुआ। अगर पहले बहुत मजबूत बुनियाद इस देश के उद्योग और कृषि के कार्य की नहीं डाली गई होती, तो यह उन्नति हम इस पिछले वर्ष में नहीं कर सकते थे। साथ ही यह भी सच है कि वह बुनियाद होते हुए भी, अगर अनुशासन नहीं आता, अगर जनता के दिल में यह सहायता की भावना नहीं आती, तो कितनी भी मजबूत बुनियाद रहे, उसपे हम एक सुन्दर भारत नहीं बना सकते। आपको याद होगा कि उसके पहले कितनी अनुशासनहीनता हो रही थी, चाहे स्कूल और कालेज में, चाहे कारखानों में, चाहे हमारे शहरों की सड़कों पर। और उससे काम तो रुका, एक आर्थिक कठिनाई के जमाने में, आवश्यक वस्तुओं की

311

जब पहले से ही कमी थी तो वह कमी और बढ़ी, क्योंकि उत्पादन रुक गया, क्योंकि सब तरफ हड़ताल के नारे उठे, क्रांति के नारे उठे । अब आपको याद है कि हम भी क्रांति में विश्वास करते हैं । गांधी जी ने - मैं मानती हूं कि वह सबसे बड़े क्रांतिकारी इस देश के थे । लेकिन उनकी क्रांति का रास्ता था - अहिंसा का रास्ता, मैत्री का रास्ता, शांति का रास्ता और अगर उनके रास्ते से हम भटक जाते और उस समय भी जो थोड़े से लोग चाहे कितने ही बहादुर हों, कितने ही योग्य हों, अगर उनके रास्ते पे हम बहक जाते, तो शायद आज भी यह भारत स्वतंत्र नहीं होता ।

लेकिन, क्योंकि हम गांधी जी के रास्ते पर पैर टिका कर आगे बढ़े तो हमने इस देश को स्वतंत्र बनाया, हमने लोकतंत्र की नींव डाली । हमने औद्योगीकरण तेजी से चलाया और हर प्रकार से देश की मज़बूती और शक्ति को बढ़ाया है । चाहे लोग कितने ही आरोप लगाएं, कितनी ही भारत की निन्दा करें, कोई नहीं है दुनिया में जो यह कह सकता है कि आज भारत जितना मज़बूत है, हर प्रकार से; वैसा कभी भी वह नहीं रहा है । और कोई यह नहीं कह सकता कि बिना इस ताकत के भारत आगे बढ़ सकता है । कोई नहीं कह सकता कि बिना ताकतवर हुए हम या अपना उद्योग बढ़ा सकेंगे या जनता को कुछ सुख और आराम दे सकेंगे ।

हम समझे थे कि एक दफ़े आज़ादी की लड़ाई लड़ी तो हमेशा के लिए हम आज़ाद हो गए । लेकिन हम क्या देखते हैं कि चाहे कभी-कभी तो फौजी हमले भी होते हैं, लेकिन उससे भी खतरनाक हैं जो गुप्त तौर से हमले होते हैं, जो दिखाई नहीं देते हैं । अब यह आवाज़ें पहले भी हम देख रहे थे, सुन रहे थे, लेकिन इस पिछले वर्ष में बहुत सी आवाजें खुले तौर से निकली हैं । जिन लोगों ने भारत का साथ नहीं दिया, जब यहां कोई रुकावट नहीं थी, किसी को गिरफ़्तार नहीं किया था, किसी अखबार पर पाबन्दी नहीं थी, तब भी जिन सरकारों ने, जिन लोगों ने भारत की सहायता नहीं की, लेकिन उन देशों की सहायता की जहां पर या फौजी सरकार थी या दूसरे प्रकार की कोई ऐसी सरकार थी जहां बजाय जन जनता की आवाज़

बिल्कुल नहीं उठ सकती थी । उस जमाने में ऐसे देशों की , ऐसी हकूमतों को मदद हुई है । किसी ने आवाज़ नहीं उठाई कि कहां पे हत्या हुई है, एक आदमी की नहीं, दो आदमियों की नहीं, कहीं सैकड़ों में, कहीं हजारों में, कहीं लाखों में । वह लोग आज हैं, जो भारत की तरफ आंख दिखाते हैं ।

लेकिन आपको याद होगा कि यह पहला दफा नहीं है । जब गांधी जी जीवित थे तो उनके बारे में भी अनेक प्रकार की बातें कही जाती थीं । उनके बाद जवाहरलाल नेहरू के बारे में कही जाती थीं और उसके बाद जब मेरे ऊपर हमला हुआ नहीं भी हुआ था तो भारत के बारे में कही जाती थीं । भारत अणु शक्ति का विस्फोट क्यों करे? बड़ा भारी खतरा सारी दुनियां को हो रहा है और दूसरे देश चाहे बम पर बम बनाकर जमा करें, चाहे अरबों रुपये खर्च करें, जब उन पर कोई खतरा नहीं है, उनकी कोई निंदा नहीं है।उल्टे और कोशिश हो रही है कि उनको हथियार बेचे जाएं ।लेकिन हम और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने केलिए कुछ काम करते हैं तो वह गलत काम होता है । जब हमने इस्पात का काम शुरू किया तो यह कहा गया कि गरीब देश में,जहां गांवों में इतनी कठिनाई है, वहां इस देश को इस्पात और लोहे की क्या आवश्यकता है । जब आप जानते हैं कि किसी भी आधुनिक देश की बुनियाद है इस्पात।किसान की जरूरतें पूरी होती हैं, कारखानों की जरूरतें पूरी होती हैं और हजार तरीकों से साधारण जनता की मांगें उससे पूरी होती हैं । आज यह सब काम, यह बुनियाद, यह नींव और जवाहरलाल नेहरू ने नहीं डाला होता तो हम सब तरफ भीख मांगते होते । लेकिन आज बहुत सी चीजों की आज भी जरूरत है,तब भी हम भीख किसी से नहीं मांगते हैं।

Self Sufficiency in food grains

कुछ ही साल पहले लोग कहते थे कि भारत अपनी जनता की कमी भी नहीं खिला सकेगा ।लेकिन आपको मालूम है कि १२ करोड़ टन पैदा हुआ है और इस साल हमारी कठिनाई यह नहीं थी कि अनाज नहीं है, यह कठिनाई थी कि उसको रखें कैसे,कहां पे रखें । तो यह सच है कि अच्छी वर्षा हुई, लेकिन यह भी सच है कि आज सरकारी

सहायता नहीं मिलती और अगर हमारे मेहनती किसान भाई वह सहायता लेने को और नये तरीकों के अपनाने के लिए तैयार नहीं होते तो यह उत्पादन नहीं हो सकता था । कुछ जगह वर्षा की कमी हुई है, सूखा पड़ा है, विशेषकर दक्षिण में, तामिलनाडु में, और दूसरी जगह, और कुछ जगह जरूरत से ज्यादा वर्षा हो रही है । तो हमारे किसानों को इससे भारी कष्ट है और मेरी पूरी सहानुभूति उनके साथ है । लेकिन हमको मालूम है कि इसका वे सामना करेंगे, हमको मालूम है कि जैसे वे मजबूत हो रहे हैं उनको नई जानकारी विज्ञान और तकनीक द्वारा उनकी ताकत हम बढ़ा रहे हैं, तो इन सब चीजों का भी वे सामना कर सकेंगे । देखना यह है कि यह कार्यक्रम अभी भी सब जगह नहीं पहुंचे हैं, यह देखना है कि कैसे इसको कोने कोने में पहुंचाएं । यह देखना है कि हरेक जगह का विशेष कार्यक्रम हो । पहाड़ी इलाकों की क्या आवश्यकता है, रेगिस्तान की क्या आवश्यकता है, जहां बहुत बारिश पड़ती है, बाढ़ आती है, वहां की क्या आवश्यकता है । इस प्रकार से हमारी योजनाएं बनेंगी, इस प्रकार से ठीक अपने अपने क्षेत्र में सोचेंगा, यह नहीं कि सब कहें कि इस्पात का कारखाना हो जाए या कोई और बड़ा कारखाना हो जाए, लेकिन जो सामान हमारे पास है, उसका कैसे पूरा पूरा उपयोग किया जाए यह भावना जब हम फैला सकें, तब और तेजी से हमारा देश और हमारी जनता बढ़ सकेगी ।

इस साल हमारे सार्वजनिक क्षेत्र के जो कारखाने हैं, जिनकी बड़ी निन्दा हमारे समाचार पत्रों में होती थी, हमारे बड़े बड़े उद्योगपति हमेशा कहते थे कि सरकार से तो कारखाने चल ही नहीं सकते, इसमें तो नुक्सान ही नुक्सान है । हमने देखा कि उनमें से बहुतों ने बहुत मुनाफा किया है, और उनका उत्पादन बहुत बढ़ा है। जो वृद्धि हुई है हमारे उत्पादन में वह इन्हीं सार्वजनिक क्षेत्र के कारखानों के द्वारा हुई और हमारी पूरी आशा है कि जो थोड़े से हैं, जहां का काम अभी संतोषजनक नहीं है, वह भी अब तेजी से अपना काम सुधारेंगे । पूरी इसकी कोशिश हो रही है । तो हरसमय, हर तरफ हमको देखना है और यह तब होगा जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य को समझे । मैं अपने

मज़दूर भाइयों और बहनों को बधाई देना चाहती हूं, क्योंकि उनके काम से यह सुधार और यह वृद्धि हुई है ।

कुछ घंटे बाद आज ही शाम को मैं यहां से श्रीलंका जा रही हूं । आप को मालूम है कि वहां पर एक बड़ा सम्मेलन एक गुटनिरपेक्षता का, हो रहा है और वहां भी मुख्य प्रश्न हम सबके सामने यही है कि अपनी आजादी को कैसे सुरक्षित रखें । आजादी केवल सीमा की नहीं, लेकिन आजादी अपनी विचारधारा की, आजादी अपनी दिशा की, आजादी अपने तई को मजबूत करने की, अपने देश में विकास और उन्नति करने की । मुख्य चीज़ यह है और क्योंकि हम सब के एक ही से प्रश्न हैं,

Non-alignment

अगर हम एक दूसरे की सहायता करते हैं, एक दूसरे से सहयोग करते हैं, तो एक बड़ी भारी ताकत हो जाती है । गुरुदेव टैगोर ने कहा - कमजोरों की ताकत-कमजोर लोग भी अगर दृढ़ता से, मजबूती से कुछ करें तो एक जबरदस्त ताकत हो जाती है और हमारा भी अनुभव यही रहा है । आजादी के आंदोलन के जमाने में क्या ताकत थी भारत की जनता की ? केवल गरीबी, केवल गुलामी, डर । लेकिन क्योंकि हम एक हो गए, क्योंकि हम न निन्दा से, न मज़ाक से, अपने रास्ते से हटे, तो यह एक दुनियां की उस समय की सबसे बड़ी शक्ति से, ज्यादा हमारे गरीब किसानों, मज़दूरों, विद्यार्थियों, इनकी ताकत उनसे भी बड़ी होगई, फौज से भी बड़ी हो गई । यह ताकत आज के गरीब देशों में हमको लानी है । मुश्किल यह है कि कुछ देश ऐसे हैं जो दूसरे के कहने में आ जाते हैं। वह समझते हैं कि अगर कुछ मदद मिल जाए तो अभी मदद ले लें। यह नहीं देखते कि अगर वह मदद ऐसी है कि उनकी स्वतंत्रता पर जरा भी आंच लाए, तो उस मदद से वे मजबूत नहीं हो सकते हैं, तो भविष्य में भी वे मदद ही मांगते रहेंगे । हमने भी मदद ली है सब देशों से, सब प्रकार की सरकारों, विचारधाराओं के देशों से और हुकूमतों से । लेकिन एक चीज़ में हम डटकर रहे ! हमारी नीति यह है, हमारी विचारधारा यह है, इस प्रकार से हम अपने देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं और इसको

देखते हुए, बिना उसके हुए, जो मदद हमें देना चाहता है उसकी मदद हमको स्वीकार है। लेकिन किसी भी शर्त पर हम मदद नहीं लेना चाहते हैं। यह शुरू से हमने कहा और इसी पर हम डटे रहे और आगे भी। आज भी अगर हमारी निन्दा है तो इसलिए नहीं कि यहां पर कुछ कदम लिए गए या कुछ थोड़े से लोग बंद हैं या समाचारपत्रों पर कुछ पाबंदी है। इसलिए है कि वह देख रहे हैं कि एक गरीब देश भी किस दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है, किसी दूसरे की परवाह न करते हुए। और इसी तरह से हमको आगे बढ़ना है। और जो हमारी निन्दा करते हैं, मैं तो उनसे एक ही शब्द कहना चाहती हूं कि जितनी वे निन्दा करेंगे, जितनी कोशिश करेंगे हमें कमजोर करने की, वही हमारी ताकत बनेगी, उसी से हम और मजबूत होंगे और उतनी ही ज्यादा तेजी से अपने रास्ते पर चलते रहेंगे।

आपने यह पिछले वर्षों में देखा कि जब भी हम पर हमला हुआ, हम उससे दबे नहीं, ~~जब~~ भी हम पर कितनी हद भूचाल जैसे भी हमारे ऊपर लोग टूट पड़े, उसका सामना किया और हम आगे बढ़े। यह देश, भारत का इतिहास, एक संघर्ष का इतिहास रहा है, मुसीबतों का इतिहास रहा है। और यह हमारा भारत एक सहनशीलता का देश रहा है और ~~अन्न-प्रत्येक-नगर~~ शांति का देश रहा है। लेकिन साथ साथ यह याद रखें कि वीरता का देश रहा है, दृढ़ता का देश रहा है, आदर्शों का देश रहा है और आज प्रत्येक नागरिक को यह हमारा इतिहास याद रखना है। यह सोचना है कि नए भारत के वे प्रतिनिधि हैं, नये भारत के वे प्रतीक हैं, नए भारत के वे चिन्ह हैं। चाहे हमारे होनहार बच्चे हों, चाहे बड़े, चाहे बूढ़े, यह जिम्मेदारी हरेक के कंधों पर है और हरेक अगर इन बातों को समझने की कोशिश करेगा-कौन प्रशंसा करता है, कौन बुराई करता है, यह सब जीवन में बहुत छोटी सी बातें हैं। प्रश्न हमारे सामने एक ही है कि किस रास्ते पर हम आगे देश को ले जा सकते हैं। किसी को अच्छा लगे या किसी को बुरा लगे-इस दृष्टिकोण से हमको आगे बढ़ना है। अगर हमारे सुन्दर बच्चे ठीक से नहीं पढ़ेंगे, खेलकूद में रुचि नहीं लेंगे तो उनका शरीर मजबूत बन सकता है, न उनका मन मजबूत हो सकता है। अगर यह युवा पीढ़ी मजबूत नहीं हुई, अगर यह रचनात्मक कार्य

में नहीं पड़ी, अगर इनमें देश का प्रेम, देश भक्ति नहीं हुई, तो फिर यह सबसे बड़ी कमजोरी, सब से बड़ी हानि देश की होगी ।

फौजें देश की सीमा को सुरक्षित रखती हैं और हम सब को कारण है कि हम अपनी सेनाओं पे गौरव करें । लेकिन सेना तब बहादुरी से लड़ सकती है, अगर उसके पीछे एक बहादुर, मजबूत देश रहे । तो आज के दिन हम अपने इतिहास को देखें और उसके हिसाब अपने भविष्य को देखें । तो हम यह निर्णय करें कि देश किस दिशा में जाएगा, कितना मजबूत होगा, कितनी प्रगति करेगा । यह किसी दूसरे की जिम्मेदारी नहीं है, यह किसी दूसरे की मदद से नहीं होगा, यह हमें अपने हाथ और पैर से, अपने दिल की ~~कल~~ मजबूती से, अपने दिमाग की तेजी से, हम सब को आपको और हमको मिलके करना है । और यह भावना अगर होगी तो इस भारत को कभी कोई पीछे नहीं हटा सकता । मुझे पूरा विश्वास है कि यह जो थोड़ा सा अनुशासन आया है इसको हम और अपनी शक्ति से बढ़ा सकेंगे ।

कुछ चर्चा चलता है कि यहां जो आपत्काल की घोषणा हुई, यह ~~क~~ कब वापस ली जाएगी । यह कोई नहीं देखता कि कई महीनों से उसमें ढील की जा रही है । और ढील का नतीजा क्या हुआ? क्या जो लोग छूटे हैं इन्होंने जरा भी यह कबूल किया कि हिंसा और इस प्रकार के आन्दोलन से, काम रोकने से, देश को हानि होती है ? या वे उसी रास्ते पर आज भी चलने को तुले हुए हैं? यह प्रश्न हमको पूछना है । हमारे हाथ में नहीं है कि क्या होगा, यह उन लोगों के हाथ में है जो देश को तोड़ने में लगे थे, जो देश में अनुशासनहीनता फैलाने में लगे थे, जो ऐसे गुटों को और व्यक्तियों को प्रोत्साहन दे रहे थे, जिन्होंने कभी भी न लोकतंत्र में विश्वास रखा है, न जिस प्रकार की स्वतंत्रता में हम विश्वास करते हैं या गुटनिरपेक्षता में विश्वास रखते हैं या साम्प्रदायिकता से लड़ने में विश्वास करते हैं, जिन्होंने कभी भी इन विचारधाराओं से सहमत नहीं रहे उनको इन आन्दोलनों ने प्रोत्साहन दिया था ।

तो हमको यह देखना है कि जब हम आगे बढ़ रहे हैं, जब बहुत ~~कम~~

वर्षों बाद पहली दफा गरीबों के लिए कार्यक्रम आरम्भ हुए हैं और सफलता से आगे बढ़ रहे हैं, चाहे जितनी तेजी से हम चाहें उतनी नहीं है। इतने बड़े देश में कोटि कोटि की जनता में अगर ७० लाख परिवारों के लिए घर मिले तो बहुत छोटा है। लेकिन जहां एक को भी पहले नहीं था तो ७० लाख बड़ा भी है। अगर हम कहें कि वह ७० लाख भी नहीं चाहिए तो फिर दूसरे लोगों को कैसे मिलेगा ?

तो यह समय है जब इन चीजों पे गहराई से हमको विचार करना है। हम नहीं चाहते कि सरकार की तरफ से या किसी संस्था की तरफ से जोर हो और न हमने इसकी कोशिश भी की है। हम चाहते हैं कि हरेक, अपने दिल से, सोच कर, अनुशासन, देश सेवा, इन सब में लगे। आपसब को तो मालूम है कि गांधी जी हमेशा कहते थे कि कोई अधिकार अधिकार नहीं है जो कर्तव्य से नहीं निकलता है। इस प्रकार के अधिकार आएंगे, अपना कर्तव्य समझ कर, तब सच्चा लोकतंत्र आ सकेगा-एक लोकतंत्र जिसमें गरीब से गरीब की आवाज सुनी जाए, जिसमें कोई भी जने(व्यक्ति) केवल अपने आर्थिक या सामाजिक बलबूते के कारण दूसरों पर हावी न हों, जिसमें हरेक जाने कि अगर हमारे अधिकार हैं तो हमारे जो गरीब भाई और बहन हैं, जो पिछड़े गरीब भाई और बहन हैं, उनके भी अधिकार हैं, और जहां हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ना है, उतना ही उनके अधिकारों के लिए भी लड़ना है। यह भावना आएगी, तब अधिकार सबको मिल सकते हैं। जब तक हम सोचते हैं कि कुछ लोगों को अधिकार मिलने चाहिए, कुछ लोगों की आवाजें उठनी चाहिये, दूसरों का चाहे कुछ भी हो, इसी तरह से हमने अपनी आजादी खोई थी और उस गड्ढे में हमको फिर से नहीं पड़ना है।

तो मैं यही आपसे कहूंगी कि हम याद रखें कि यह भारत बलिदान की भूमि है। आज उस प्रकार का बलिदान नहीं चाहिये, आज हिम्मत चाहिए कि हम हिम्मत से, दृढ़ता से जिएं, एक नया जीवन बनाएं अपने देश के लिए और अगर इस महान कार्य में सब लगें तो हम अपने देश को बहुत ऊंचा उठा सकें और याद रख रखिये देश के माने केवल धरती या

पेड़ या पहाड़ नहीं हैं, गोकि उनसे भी हम प्रेम करते हैं और उनको हम सुन्दर बनाने में, सुधारने में लगे हैं, लेकिन जब देश कहते हैं, तो उस देश की कोटि कोटि जनता है, उसको ऊपर उठाना है।

उनके घरों में सुख और आराम पहुंचाना है, उनके बच्चों को हर प्रकार का सौंदर्य हमको देना है। इस महान यात्रा में हमारे संग आप कदम से कदम, कंधे से कंधे मिल के चलें, यही आज के दिन मेरी आपसे हार्दिक कामना है।

आपको मैं इस दिन की शुभकामनाएं देती हूं और भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूं। मेरे संग मिलकर सब बच्चे, बड़े, बूढ़े, नौजवान जयहिन्द अब बोलें।

जयहिन्द ! जयहिन्द !! जयहिन्द !!!

बोलो - भारत माता की जय।